International Journal of Literacy and Education 2023; 3(1): 113-116

International Journal of Literacy and Education

E-ISSN: 2789-1615
P-ISSN: 2789-1607
Impact Factor: 5.69
IJLE 2023; 3(1): 113-116
Received: 02-01-2023
Accepted: 05-02-2023

मोहन लाल
शोध छात्र शिक्षा, अवधेश प्रताप सिंह वि.वि., रीवा, मध्य प्रदेश, भारत

डॉ. पतंजलि मिश्र
प्राचार्य, आदर्श शिक्षा महाविद्यालय, पुरैना, रीवा, मध्य प्रदेश, भारत

Corresponding Author:
मोहन लाल
शोध छात्र शिक्षा, अवधेश प्रताप सिंह वि.वि., रीवा, मध्य प्रदेश, भारत

अल्पसंख्यक समुदाय की स्नातक एवं स्नातकोत्तर उत्तीर्ण महिलाओं के सशक्तिकरण का समीक्षात्मक अध्ययन

मोहन लाल, डॉ. पतंजलि मिश्र

सारांश
प्रस्तुत शोध पत्र रीवा जिले में अल्पसंख्यक समुदाय की महिलाओं में सशक्तिकरण का समीक्षात्मक अध्ययन पर आधारित है। प्रस्तुत शोध कार्य का क्षेत्र जिला रीवा है। इसके अन्तर्गत 9 विकासखण्ड – रीवा, रायपुर कर्चुलियान, सिरमौर, जवा, हनुमना, गंगेव, त्यौथर, नईगढ़ी एवं मऊगंज की अल्पसंख्यक समुदाय के कुल 200 अल्पसंख्यक महिलाओं (140 स्नातक + 60 स्नातकोत्तर) का चयन न्यादर्श हेतु लिया गया है। अल्पसंख्यक समुदायों की महिलाओं में सशक्तिकरण के स्तर सामान्य नहीं है। आवृत्तियों के अवलोकन से देखने में पाया कि अल्पसंख्यक समुदाय की महिलाओं में उच्च स्तर की ओर सशक्तिकरण में वृद्धि हो रही है। साथ ही अल्पसंख्यक समुदाय की स्नातक एवं स्नातकोत्तर उत्तीर्ण महिलाओं के सशक्तिकरण में सार्थक अन्तर है। अर्थात् जनसंख्या शिक्षा में स्नातकोत्तर महिलाओं के सशक्तिकरण की स्थिति स्नातक महिलाओं की तुलना में अधिक संतोषजनक है।

कूटशब्दः रीवा जिला, अल्पसंख्यक समुदाय, महिला सशक्तिकरण, स्नातक एवं स्नातकोत्तर

1. प्रस्तावना

भारत देश के प्रत्येक नागरिक को अपने धर्म के पालन की पूर्ण पालन की पूर्ण स्वतन्त्रता है। 2011 की जनसंख्या की गणानुसार भारत में हिन्दू धर्म 80.5 प्रतिशत, मुस्लिम धर्म के 13.4 प्रतिशत, ईसाई धर्म के 2.3 प्रतिशत, सिक्ख धर्म के 1.9 प्रतिशत, बौद्ध धर्म के 0.8 प्रतिशत, जैन धर्म के 0.4 प्रतिशत तथा अन्य धर्मों के 0.6 प्रतिशत अनुयायी विद्यमान है। भारत देश में हिन्दू धर्मावलबियों अपेक्षा जिन धर्मावलम्बियों की संख्या कम होती है। उन्हें अल्पसंख्यक की श्रेणी में स्थान दिया जाता है।

आज अल्पसंख्यक वर्गों में बालिका शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण बहुत ही संर्कीण है। भारतीय समाज में अल्पसंख्यक वर्ग ही नहीं बहुसंख्यक वर्ग भी बालिका शिक्षा के प्रति बहुत छोटी सोच रखता है। ये इस बात से अनभिज्ञता रखते है कि जब एक लड़की पढ़ती है तो उसका पूरा परिवार पढ़ता है क्योंकि पढ़ी–लिखी लड़की हर समस्या का समाधान सोच समझकर आत्मविश्वास के साथ, पूर्ण निर्णय क्षमता अपनाते हुए करती है। स्त्री स्वयं अपने, अपने बच्चों और पूरे परिवार को संस्कारी बनाने में अहम् भूमिका निभाती है, फिर उसे उच्च शिक्षा से वंचित क्यों रखा जाता है? शिक्षित लड़की अशिक्षित लड़की की अपेक्षा अधिक अपने जीवन से सन्तुष्टि होती है। वह अपने परिवार के हित में परिवार नियोजन के माध्यम से जनसंख्या नियत्रण में भी अपनी अहम् भूमिका निभा सकती है। मनुष्य की मानसिक शक्ति के विस्तार हेतु पुरूष स्त्री जब एक ही गाड़ी के दो पहिये है तो एक पहिये को शिक्षा रूपी हवा से वंचित कर कमजोर क्यों बनाया जाये। अशिक्षित लड़की विवश होकर माता–पिता, पति और बच्चों पर निर्भर हो जाती है। ये अपने जीवन के प्रति असन्तुष्ट ही दिखाई देती है। यह अल्पसंख्यक वर्ग की बालिकाये अपने जीवन से सन्तुष्ट नहीं होती क्योकि यह अपने ही घर में असमानता का व्यवहार देखती है। इसी बात को प्रेरणा देते हुए जीवन के प्रति सन्तुष्टि बढ़ाने हेतु शिवमान सिंह जी ने लिखा है ''आज लड़कियों में जीवन सन्तुष्टि के भाव नहीं हैं।'' उन्हें जीवन में बिना घबराये आगे बढ़ने की जरूरत है।

2. अध्ययन की आवश्यकता

शोधार्थी द्वारा प्रस्तुत शोध कार्य न केवल रीवा जिले वरन् सम्पूर्ण मध्यप्रदेश के अल्पसंख्यक समुदाय की महिलाओं में सशक्तिकरण का समीक्षात्मक अध्ययन कर तथा ऐसे सुझाव शोध कार्य के उपरान्त दिये जा सकेंगे जिनका प्रयोग कर राज्य शासन द्वारा कठिनाइयों को दूर कर विकसित करने पर समर्थ हो सकता है।

जनसंख्या शिक्षा को एक शैक्षिक प्रक्रिया के रूप में परिभाषित किया गया है जो व्यक्तियों की सहायता करता है। 1. स्वयं और उनके समुदायों के लिए संभावित कारणों और जनसंख्या घटनाओं के परिणामों को जानने के लिए, 2. स्वयं और उनके समुदायों के लिए परिभाषित करने के लिए जनसंख्या प्रक्रियाओं और विशेषताओं से संबंधित समस्याओं की प्राकृतिय और 3. संभावित प्रभावी साधनों का आकलन करने के लिए,

जिसके माध्यम से समाज पूरी तरह से और व्यक्तिगत रूप से प्रतिक्रिया देता है और इन प्रक्रियाओं को प्रभावित करता है ताकि अब और भविष्य में जीवन की गुणवत्ता को बढ़ाया जा सके।

3. उद्देश्य

अतः प्रत्येक क्रिया का कुछ उद्देश्य अवश्य होता है बिना उद्देश्य के विभिन्न प्रकार कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है। इन्हीं उद्देश्यों को ध्यान में रखकर शोध कार्य किया जाता है। प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में निम्नलिखित उद्देश्य है –

- अल्पसंख्यक समुदाय की महिलाओं में सशक्तिकरण के निश्चित स्तर का अध्ययन करना।
- अल्पसंख्यक समुदाय की स्नातक एवं स्नातकोत्तर उत्तीर्ण महिलाओं के सशक्तिकरण की सार्थकता का अध्ययन करना।

4. शोध की परिकल्पनाएँ

1. अल्पसंख्यक समुदाय की महिलाओं में सशक्तिकरण का कोई निश्चित स्तर नहीं होता है।
2. अल्पसंख्यक समुदाय की स्नातक एवं स्नातकोत्तर उत्तीर्ण महिलाओं के सशक्तिकरण में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

5. शोध समस्या का सीमांकन

प्रस्तुत शोध कार्य का क्षेत्र जिला रीवा है। इसके अन्तर्गत 9 विकासखण्ड – रीवा, रायपुर कर्चुलियान, नईगढ़ी, हनुमना, मऊगंज, गंगेव, त्योंथर, जवां एवं सिरमौर हैं। शोधार्थी सर्वप्रथम रीवा विश्वविद्यालय से उन महिलाओं के पते एवं सर्म्पक की जानकारी प्राप्त करेगा जिन्होंने स्नातक एवं स्नातकोत्तर शिक्षा के दौरान जनसंख्या शिक्षा का अध्ययन किया है।

समष्टि व प्रतिदर्शः प्रस्तुत शोध कार्य का क्षेत्र जिला रीवा है। इसके अन्तर्गत 9 विकासखण्ड – रीवा, रायपुर कर्चुचिलयान, सिरमौर, जवा, हनुमना, गंगेव, त्यौथर, नईगढ़ी एवं मऊगंज की अल्पसंख्यक समुदाय के कुल 200 अल्पसंख्यक महिलाओं (140 स्नातक + 60 स्नातकोत्तर) का चयन न्यादर्श हेतु लिया जाएगा। इस प्रकार यह अध्ययन दोनों दृष्टियों से सैद्धान्तिक एवं व्यवहारिक रूप में उपयोगी होगा।

6. अध्ययन विधि

- **सर्वेक्षण अध्ययन विधिः** सर्वेक्षण अनुसंधान का एक महत्वपूर्ण अंग है। इसके द्वारा शोध समस्या के विभिन्न पक्षों से सम्बन्धित आंकड़ों का संग्रहण किया जाता है। आंकड़े मुख्य तथा वर्तमान स्तर का निर्धारण, वर्तमान स्तर की मान्य स्तर से तुलना, तथा वर्तमान स्तर को विकसित करने में महत्वपूर्ण उपादान होते हैं। सर्वेक्षण में व्यक्ति की अपेक्षा तथ्यों, परिस्थितियों तथा गणनाओं को प्राथमिकता दी जाती है।
- **साख्यिकीय विधि :** सर्वेक्षण तथा साक्षात्कार विधि से प्राप्त ऑकड़ो का वर्गीकरण एवं सारणीयन किया गया है। जिनकी व्याख्या एवं विश्लेषण हेतु, सांख्यकीय विधियॉ प्रयोग में लाई गयी है। प्रस्तुत शोधकार्य में परिकल्पनाओं का परीक्षण सांख्यकीय विधियों द्वारा करने के लिये– काई वर्ग (χ^2), Mean, प्रतिशत (%), S.D., 't' Test आदि प्रयोग किये गये है, साथ ही गुणात्मक विश्लेषण पर भी ध्यान रखा गया हैं।

7. शोध उपकरण

महिला सशक्तिकरण मापनी : यह मापनी शोधकर्ता ने अपने आदरणीय निर्देशक महोदय के निर्देशन से राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रषिक्षण परिशद् (एन.सी.ई.आर.टी) नई दिल्ली के नियमों को दृष्टिगत रखते हुए स्वयं ने निर्मित की है। शोधकर्ता ने महिला सशक्तिकरण के समस्त पक्षों को ध्यान में रखते हुए विकल्पों का निर्माण किया। तत्पश्चात् निर्देशक महोदय के परामर्शानुसार तथा वरिष्ठ शोध विशेषज्ञों से सुधारात्मक सुझाव लिए एवं उनसे निर्देश प्राप्त कर मापनी में वांछित परिवर्तन करके प्रमापीकृत किया गया। यह मापनी केवल इस उद्देश्य से निर्मित की गई है जिससे कि अल्पसंख्यक समुदाय की विभिन्न शैक्षिक स्तर की महिलाओं के सशक्तिकरण के स्तर का पता लगाया जा सकेगा।

8. पूर्व अध्ययन समीक्षा

पूर्ववर्ती अध्ययन से तात्पर्य अनुसंधान की समस्या से सबन्धित उन सभी प्रकार की पुस्तकों, ज्ञान कोशों, पत्र–पत्रिकाओं, शोध पत्रों तथा अभिलेखों आदि से है, जिनके अध्ययन से अनुसंधानकर्ता को अपनी समस्या के चयन, परिकल्पनाओं के निमार्ण, अध्ययन की रूपरेखा तैयार करने तथा कार्य को आगे बढ़ाने में सहायता मिलती है इनमें से मुख्य रूप से पाठक, पी.डी (2007)[1], अभलेख यादव (2019)[2], चौधरी, कल्पना (2009)[3], चौरसिया, धनजी (2011)[4], देवपुरा, प्रतापमल (2005)[5], धर, प्रांजल (2007)[6], गौरी, डॉ कृष्ण चंद्र (2013)[7] ने शोध विधि एवं महिला सशक्तिकरण से सम्बन्धित कार्य किये है।

9. रीवा जिले का सामान्य परिचय

जिला रीवा मध्य प्रदेश के उत्तरी–पूर्वी कोने में स्थित है। रीवा का नामकरण नर्मदा नदी के दूसरे नाम 'रेवा' पर आधारित है। रीवा नगर का नाम पहले शायद 'रेवा' रखा गया था। उसी का बिगड़ा रूप अब रीवा बन गया है।

इसके उत्तर में उत्तर प्रदेश के बांदा एवं इलाहाबाद जिले, पूर्व तथा पूर्व–उत्तर में उत्तर प्रदेश का ही मिर्जापुर जिला, दक्षिण में अपने राज्य का सीधी जिला और दक्षिण–पश्चिम तथा पश्चिम में सतना जिला है। इसका आकार लगभग त्रिभुज के समान है। इसका विस्तार 24.18^0 उत्तरी अक्षांश से 25^0 उत्तरी अक्षांश तथा 81.2^0 पूर्वी देक्षांश से 82.18^0 पूर्वी देक्षांश के मध्य है। रीवा जिले का क्षेत्रफल 6287 वर्ग किलोमीटर है।

10. परिणामों का विश्लेषण एवं व्याख्या

शोधार्थी द्वारा किया गया कोई भी शोध कार्य सही अर्थों में तभी प्रतिबिम्बित होता है, जब शोधार्थी द्वारा उस समस्या की वास्तविक स्थिति का मूल्यांकन किया जाय। इसके लिये यह आवश्यक है, कि शोधार्थी द्वारा शोध अध्ययन में उपयोग किये गये समस्त शोध उपकरणों द्वारा प्राप्त जानकारियों को व्यवस्थित क्रम में सारणीबद्ध किया जाय, निम्नानुसार है–

परिकल्पना क्र. – 1: "अल्पसंख्यक समुदाय की महिलाओं में सशक्तिकरण का कोई निश्चित स्तर नहीं होता है।"

सारणी क्रमांक – 1 : अल्पसंख्यक समुदाय की महिलाओं में सशक्तिकरण का अध्ययन

आवृत्ति	उच्च स्तर	सामान्य स्तर	निम्न स्तर	योग
अपेक्षित आवृत्ति	38	126	36	200
अवलोकित आवृत्ति	58	98	44	200
काई वर्ग (χ^2)	χ^2 = 23.56			
'पी' मान	0.05 एवं 0.01 स्तर पर सार्थक			

स्वतंत्रता के अंष 2

0.05 स्तर पर सार्थकता हेतु मान 5.99

0.01 स्तर पर सार्थकता हेतु मान 9.21

df = (c-1) (r-1) = (3-1)(2-1) = 2

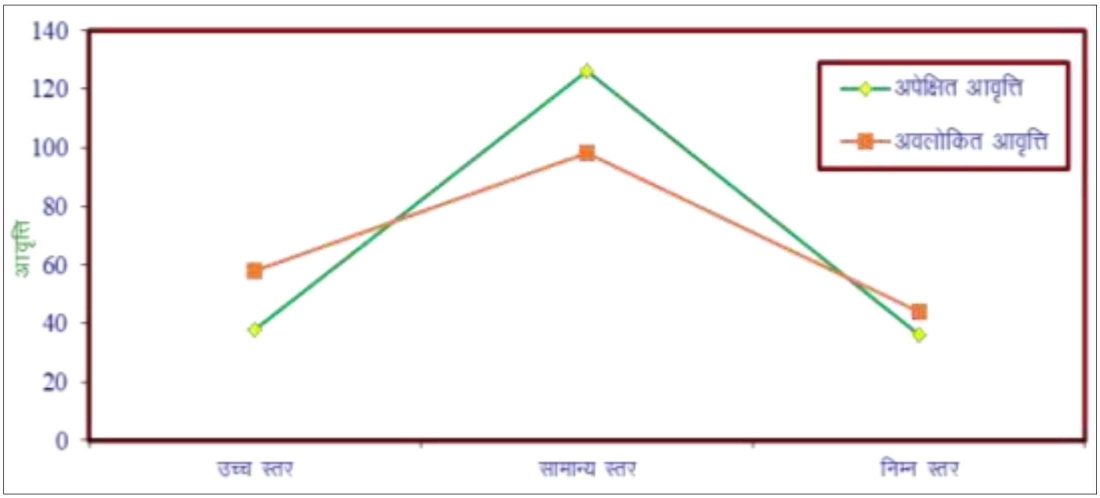

आरेख 1: शोध क्षेत्र के अल्पसंख्यक समुदाय की महिलाओं में सशक्तिकरण का आरेखीय निरूपण

विश्लेषण एवं व्याख्या

उपरोक्त सारणी क्रमांक 1 मे न्यादर्श में चयनित शोध क्षेत्र के अल्पसंख्यक समुदाय की महिलाओं में सशक्तिकरण से सम्बधित प्रदत्त संकलित किये गये हैं। संकलित प्रदत्त प्राथमिक स्त्रोत पर आधारित है। अल्पसंख्यक समुदायों की महिलाओं में सशक्तिकरण के सम्बन्ध में आवृतियाँ दी गई है। अपेक्षित आवृत्तियों एवं अवलोकित आवृत्तियों के मध्य अन्तर की गणना हेतु काई वर्ग परीक्षण प्रसामान्य संभावना को मानते हुये की गई है। गणना द्वारा काई वर्ग मान $\chi^2 = 23.56$ पाया गया है। काई वर्ग की सार्थकता तालिका में स्वतन्त्रता के अंश df 2 पर 0.05 एवं 0.01 पर क्रमशः 5.99 – 9.21 दिया गया है। गणना द्वारा प्राप्त मान सार्थकता मान से अधिक है। इसलिए निर्धारित परिकल्पना को अस्वीकृत किया जाता है।

परिकल्पना क्र. – 2: "अल्पसंख्यक समुदाय की स्नातक एवं स्नातकोत्तर उत्तीर्ण महिलाओं के सशक्तिकरण में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।"

सारणी क्रमांक – 2 : अल्पसंख्यक समुदाय की स्नातक एवं स्नातकोत्तर उत्तीर्ण महिलाओं के सशक्तिकरण का अध्ययन

समूह		स्नातक उत्तीर्ण महिलाएं	स्नातकोत्तर उत्तीर्ण महिलाएं
समूह की संख्या (N)		140	60
मध्यमान (M)		57.57	67.17
मानक विचलन (SD)		18.68	17.23
क्रान्तिक निष्पत्ति ('t')		3.52	
निष्कर्ष	0.05 सार्थकता स्तर पर	सार्थक अन्तर है	
	0.01 सार्थकता स्तर पर	सार्थक अन्तर है	

$df = (N_1\text{-}1) + (N_2\text{-}1)$

$df = (140\text{-}1) + (60\text{-}1) = 139+59 = 198$

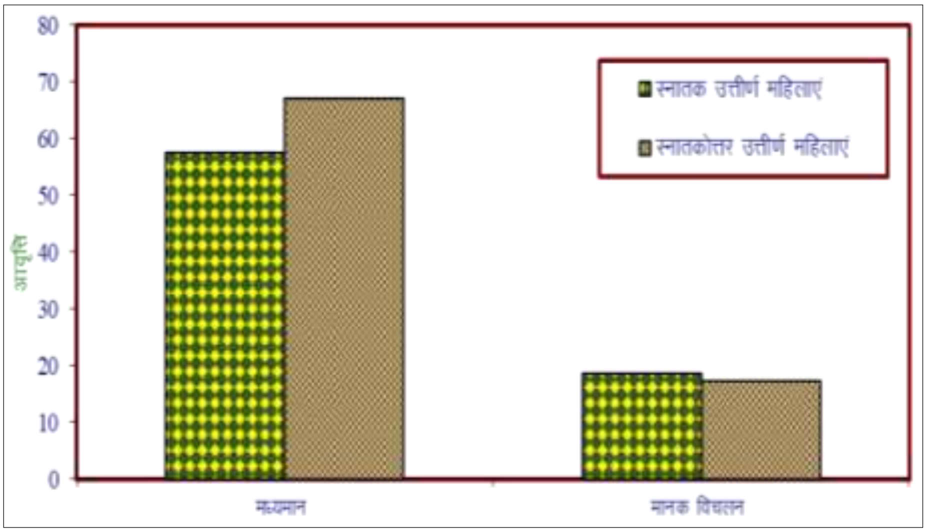

आरेख 2: शोध क्षेत्र के अल्पसंख्यक समुदाय की स्नातक एवं स्नातकोत्तर उत्तीर्ण महिलाओं के सशक्तिकरण का आरेखीय निरूपण

विश्लेषण एवं व्याख्या

उपरोक्त सारणी क्रमांक 2 मे न्यादर्श में चयनित अल्पसंख्यक समुदाय की स्नातक एवं स्नातकोत्तर उत्तीर्ण महिलाओं के सशक्तिकरण से सम्बधित प्रदत्त संकलित किये गये हैं। संकलित प्रदत्त प्राथमिक स्त्रोत पर आधारित है। सारणी में संकलित प्रदत्तों का सांख्यिकीय विश्लेषण से स्पष्ट है कि शोध क्षेत्र के अल्पसंख्यक समुदाय की स्नातक उत्तीर्ण महिलाओं के सशक्तिकरण में सार्थकता का औसत उपलब्धि 62.87 है तथा मानक विचलन 16.89 है, और स्नातकोत्तर उत्तीर्ण महिलाओं के सशक्तिकरण में सार्थकता का औसत उपलब्धि 68.15 है तथा मानक विचलन 15.58 है।

198 df पर सार्थकता के लिए 't' का मानक मान 0.01 विश्वास स्तर पर 2.33 तथा 0.05 विश्वास स्तर पर 1.64 है, जबकि अध्ययन से प्राप्त 't' का मान 3.38 है, जो कि दोनो विश्वास स्तरों के मानों से अधिक है। इसलिए निर्धारित शून्य परिकल्पना अस्वीकृत कर कहा जा सकता है कि अल्पसंख्यक समुदाय की स्नातक एवं स्नातकोत्तर उत्तीर्ण महिलाओं के सशक्तिकरण में सार्थक अन्तर है। अर्थात् जनसंख्या शिक्षा में स्नातकोत्तर महिलाओं के सशक्तिकरण की स्थिति स्नातक महिलाओं की तुलना में अधिक संतोषजनक है।

11. निष्कर्ष

- अल्पसंख्यक समुदायों की महिलाओं में सशक्तिकरण के स्तर सामान्य नहीं है। आवृत्तियों के अवलोकन से देखने में पाया कि अल्पसंख्यक समुदाय की महिलाओं में उच्च स्तर की ओर सशक्तिकरण में वृद्धि हो रही है। साथ ही अल्पसंख्यक समुदायों की महिलाओं का सशक्तिकरण निम्न स्तर की संख्या प्रसामान्य स्तर से अधिक है जो इस बात का द्योतक है, कि अभी भी सशक्तिकरण की बहुत आवश्यकता है और सभी वर्गों की महिलाओं को एक समान अग्रसर और विकास किया जाये।
- अल्पसंख्यक समुदाय की स्नातक एवं स्नातकोत्तर उत्तीर्ण महिलाओं के सशक्तिकरण में सार्थक अन्तर है। अर्थात् जनसंख्या शिक्षा में स्नातकोत्तर महिलाओं के सशक्तिकरण की स्थिति स्नातक महिलाओं की तुलना में अधिक संतोषजनक है।

12. सन्दर्भ ग्रंथ

1. पाठक, पी.डी (2007) – भारतीय शिक्षा और उसकी समस्यायें इक्कीसवाँ संस्करण, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा.
2- यादव, अभलेख – "साहित्य के क्षेत्र में महिला सशक्तीकरण" Research Review International Journal of Multidisciplinary. 2019;4(3): 839-841.
3. चौधरी, कल्पना (2009), भारतीय महिलाएँ और वानिकी सहकारिता, अर्जुन पब्लिशिंग हाऊस अंसारी रोड दरियागंज नई दिल्ली – 110002.
4. चौरसिया, धनजी (2011), ग्रामीण महिला सशक्तिकरण, कुरूक्षेत्र मासिक पत्रिका, सितम्बर 2011, 'ए' विंग गेट नं. 5, निर्माण भवन ग्रामीण विकास मंत्रालय नई दिल्ली –110011.
5. देवपुरा, प्रतापमल (2005), महिला सशक्तीकरण, कुरूक्षेत्र मासिक पत्रिका, मार्च 2005, ए विग गेट नं. 5, निर्माण भवन ग्रामीण विकास मंत्रालय नई दिल्ली 110011.
6. धर, प्रांजल (2007), महिला सशक्तिकरण, कुरूक्षेत्र मासिक पत्रिका मार्च 2007, ए विंग गेट नं. 5, निर्माण भवन ग्रामीण विकास मंत्रालय नई दिल्ली 110011.
7. गौरी, डॉ कृष्ण चंद्र (2013), ग्रामीण महिला सशक्तिकरण, कुरूक्षेत्र मासिक पत्रिका, अगस्त 2013, प्रकाशक, 'ए' विंग गेट 5; निर्माण भवन ग्रामीण विकास मंत्रालय नई दिल्ली 110011.